वैदिक सभ्यता 1500 BC – 600 BC

ऋग्वैदिक काल | उत्तर वैदिक काल

I ऋग्वैदिक काल

1500 BC — 1000 BC

(1) आर्यो का आगमन 1500 BC से कुछ पहले हुआ

[2] ऋग्वेद की प्रार्थनाओ मे जिस भौगोलिक स्थिति का वर्णन है उससे प्रारम्भिक आर्यो के निवास स्थान का पता चलता है आर्य लोग भारत के जहां सबसे पहले बसे वह सप्त सैन्धव क्षेत्र के नाम से जाना जाता है क्योकि ऋग्वेद मे उल्लेखित है कि इस क्षेत्र मे सात नदियां बहती थी, अतः 1500 BC से लेकर 1000 BC तक आर्य लोग जहां बसे या रहे वह वर्तमान पुर्वी अफगानिस्तान, पंजाब एव पश्चिमी उतर प्रदेश का क्षेत्र है।

Note– सप्त सैन्धव – सिन्धु, वितस्ता (झेलम), अस्कनी (चिनाव) परुष्णी (रावी) विपाशा (व्यास), शुतुद्री (शतलज) एव सुरस्वती (सरस्वती)

[3] ऋग्वेद की जातियों ने अंत मे जिस भौगोलिक क्षेत्र पर अपना अधिकार कायम किया था उसका साफ-साफ संकेत कुछ नदियों के नामों से मिलता है। जिसे बडी आसानी से पहचाना जा सकता है इसमे से प्रमुख नदियों का नाम इस प्रकार है – कुभा (काबुल), स्वास्तु (स्वात), क्रुमु (कुर्रम), गोमल (गोमती), सिन्धु, सुसोमा (सोहन), वितस्ता (झेलम), अस्कनी (चिनाव), मरुद वृधा (मरुदवर्धवान), परुष्णी (रावी), सुरस्वती –(सरस्वती), दृषद्वती (रक्षिया चितंग), यमुना गंगा और सरयु

इन नदियों का उल्लेख यह बताता है कि पुर्वी अफगानिस्तान से गंगा की तराई तक बड़ा भूभाग आर्यो के अधिकार मे था

Scanned with CamScanner

इस क्षेत्र का एक बड़ा भाग सप्तसैन्धव के नाम से प्रचलित था, इस बृहत प्रदेश के सारा जातियों से पूर्णतः अधिकृत नहीं हो सका था, क्योंकि हम दासों की चर्चा भी सुनते है जिन्होंने इस भूभाग का कुछ न कुछ भाग अवश्य ही अपने अधिकार मे रखा होगा। और जिसका नीलामल अवश्य ही मंद और क्रमिक गति से हुआ होगा देश का बड़ा भाग था तो जंगलो से आच्छादित था या बिल्कुल ही बंजर था

[4] ऋग्वेद के 42 नदियों की उल्लेख है सिन्धु नदिया आर्य की सबसे बड़ी नदी थी तथा महत्वपूर्ण भी जिसकी चर्चा ऋग्वेद मे बार-बार की गई है। सरस्वती नदी आर्यो की सबसे पवित्र नदी थी

Note - ऋग्वेद के गंगा का उल्लेख एक बार और जमुना का उल्लेख तीन बार आया है

प्रारम्भिक आर्य लोग महासागर से परिचित नही थे। वैसे ऋग्वेद मे समुद्र शब्द का उल्लेख मिलता है लेकिन समुद्र विशाल जल राशी का द्योतक था

ऋग्वेद के एक ही पर्वत माला हिमालय का वर्णन मिलता है और उसकी एक चोटी मुंजवत का उल्लेख मिलता है

ऋग्वेद के मरुस्थल के लिए "धन्व" शब्द का प्रयोग किया गया है ऋग्वेद मे तीन मरुस्थलो की बात कही गई है।

[5] ऋग्वेद काल की जानकारी के स्रोत :-

① ऋग्वैदिक आर्यो की जानकारी आर्यो का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है। ऋग्वेद है

यही कारण है कि प्रारम्भिक आर्यों के काल को ऋग्वैदिक काल के नाम से जाना जाता है

(II) ऋग्वेद सबसे प्राचीनतम वेद है जिसकी रचना काल 1500BC से लेकर 1000BC तक मानी जाती है।

(III) प्रारम्भिक आर्यों के जानकारी के पुरातात्विक साक्ष्य नगण्य है। कुछ कांसे के औजार मिले है। जैसे - छेद वाली कुल्हाड़ी, खड्ग इत्यादि, पत्थर के भी कुल्हाड़ी मिली है

(IV) ऋग्वैदिक काल कांस्ययुगीन काल या सभ्यता थी ताम्बे सम्भवतः ये लोग राजस्थान के खेत्री नामक स्थान से मंगवाते थे जबकी टीन सम्भवतः अफगानिस्तान से मंगवाते थे

(V) ताम्बा और कांसा के लिये जो शब्द का प्रयोग ऋग्वेद मे किया गया है वह है "अयस"

6. प्रारम्भिक संघर्ष ⇒

(I) आर्य लोग कई खेपो मे भारत आये

(II) भारत मे बसने के क्रम मे उन्हे यहां दास एवं दस्यु से संघर्ष करना पड़ा लेकिन दास दस्यु वे लगातार जितते गये क्योंकि उसके पास अश्व चालीत रथ व साथ ही साथ उच्च कोटी के कासे के बेहतर हथियार थे

नोट :— आर्यों के युध नेता ~~[illegible]~~ इन्द्र थे ऋग्वेद मे इन्द्र को पुरन्दर कहा गया है पुरन्दर का अर्थ होता है किलो को ध्वस्त करने वाला।

(III) ऋग्वेद मे जो दास एवं दस्यु का उल्लेख है उसमे दास के प्रति कुछ आर्य लोग कुछ नम्र थे इससे यह आभास मिलता है कि दास लोग परिवर्ती आर्य को भी एक शाखा थे। क्योंकि ईरानी ग्रंथा मे भी

दास शब्द का उल्लेख मिलता है।

(iv) दस्यु सम्भवतः यहाँ के मूल निवासी थे जिन राजाओं ने दस्यु को पराजित किया वे त्रसदस्यु कहलाये ऋग्वेद मे दस्यु हत्या का उल्लेख बार-बार मिलता है। दस्यु लोग यहाँ के मूल निवासी थे तथा दुग्ध के लिए मवेशी नही पालते थे एवं लिंग पुजक थे

नोट :- सिन्धु सभ्यता मे लिंग एवं योनि दोनो के प्रतीक मिले है जबकी ऋग्वैदिक काल मे सिर्फ लिंग का उल्लेख मिलता है।

(v) बसने के क्रम मे कुछ आर्य शासक भी बन गये जैसे - भरत त्रित्सु - क्रिवी आदि

(vi) दसराज्ञयुद्ध :—

(क) आर्य कई जनो (कबिलो) मे विभक्त थे जिनमे पांच जनो के नाम अकसर मिलते है जिसे पंचजन/पंचजण्य कहा जाता है

(ख) पंचजन या पंचजण्य :→ अनु, पुरु, यदु, दुह्यु एवं तुर्वस

(ग) भरत कुल के राजाओ का दस राजाओं की कुल से दुश्मनी थी जिसमे पांच आर्य शासक वर्ग थे जबकी पांच आर्य शासक वर्ग के बाहर के थे

(घ) ऋग्वेद के स्थान पर दस राजाओं के युद्ध का उल्लेख मिलता है जो भरतो के राजा सुदास के साथ हुआ था सुदास के पुरोहित वशिष्ठ थे

(ङ) भरतो के विरुद्ध एक दस राजाओं का संघ था जिसमे पांच जन अनु, द्रुह्यु, यदु, पुरु और तुर्वस के अतिरिक्त पांच लघु जन जातियां - अलीन, पक्थ, भलानस, शिव तथा विषाणिन के राजा ऋषि विश्वामित्र इस संघ के पुरोहित थे

Scanned with CamScanner

(घ) यह युद्ध पश्चिमोत्तर प्रदेश मे बसे हुए पूर्व कालीन जन तथा ब्रह्मवर्त के उत्तर कालीन आर्यों के बीच उत्तराधिकारी के प्रश्न पर लड़ा गया था

नोट → ब्रह्मवर्त : सरस्वती दृषद्वती एवं अथवा नदियों की भूमियों को सम्मिलित रूप से ब्रह्मवर्त कहा जाता है था

(ङ) दशराज - युद्ध के कारण भरत के राजा सुदास ने विश्वामित्र को कुल पुरोहित के पद से हटाकर वशिष्ठ को पुरोहित बना दिया था। विश्वामित्र ने दस राजाओं को एकत्रित किया और सुदास पर आक्रमण किया

(च) इस युद्ध मे भरत के कुल के राजा सुदास ने परुष्णी नदी (रावी नदी) के किनारे दस ऋग्वैदिक कालीन राजाओं को पराजित करके ऋग्वैदिक कालीन राजाओं का सर्वश्रेष्ठ सम्राट बन गया। इसी भरत कुल के नाम पर इस देश का नाम भारत पड़ा। भरत जन ऋग्वैदिक कालीन जन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण जन था जो सरस्वती तथा यमुना नदियों के बीच के प्रदेश मे निवास करता था

(छ) पराजित जन के सबसे महान पुरु जन था कालान्तर मे भरत एवं पुरु कबिला मे मैत्री हो गयी और एक नये शासक वर्ग की स्थापना हुई जो कुरु वंश (भरत + पुरु = कुरु) कहलाया।

(ज) कालान्तर मे कुरुओं ने पंचाल से मिलकर एक नया शासक वर्ग बनाया जो उत्तर वैदिक काल मे कुरु पंचाल के नाम से जाना जाता है

नोट : — (i) ब्रह्मर्षि गंगा यमुना तथा उसके आस-पास के प्रदेश को ब्रह्मर्षि प्रदेश कहा जाता है। (ii) आर्यवर्त :— हिमालय पर्वत से लेकर विन्ध्य पर्वत तक तथा पूर्वी समुद्र से लेकर पश्चिमी समुद्र तक के सम्पूर्ण भूभाग को आर्यावर्त के नाम से जाना जाता है

(iii) आर्यावर्त के लोग गोरे थे जबकि अनार्य लोग काले थे ऋग्वेद के अनार्यों को बिना नाक वाला कहा गया है।

(iv) ऋग्वेद के मंत्र मे प्रयुक्त शब्दों की संख्या एक लाख तीरपन हजार नौ सौ बहत्तर (1,53,972) है। एक लाख तीरपन हजार नौ सौ बहत्तर

(v) ऋग्वेद मे आर्य शब्द का उल्लेख 36 बार आया है।

(vi) – ऋग्वेद के 10वे मंडल मे 42 नदियां सप्त सैन्धव क्षेत्र मे होने की बात कही गयी है। लेकिन उनमे से केवल 19 नाम ही गये गये है।

(vii) सरस्वती नदी को 'नदीतम' '' अर्थात श्रेष्ठतम नदियो की माता, नदियों मे अग्रवती' कहा गया है।

(viii) ऐसा प्रतीत होता है कि ऋग्वेद मे कही गयी सरस्वती नदी अवेस्ता मे उल्लेखनीय दक्षिण अफगानिस्तान के हरख्वती नदी क्योंकि हेलमंद है।